अन्तः चेतना की प्रबलता

तेजपाल सिंह
रा० ज० स० रुड़की

एक स्त्री छत से नीचे गिर गई, और उसे काफी चोट लगी। उसके पुत्र और पुत्रवधु ने उसे एक अस्पताल में भर्ती किया। डॉक्टर ने निरीक्षण कर बताया कि अम्मा जी की रीढ़ की हड्डी में काफी चोट आई है। पूर्णतः ठीक होने की संभावना तो बहुत कम है परन्तु प्रयास करेंगे। बेटे ने डॉक्टर से कहा जो भी हो, आप उपचार शुरू कीजिए। डॉक्टर ने उसे अपने अस्पताल में भर्ती कर उपचार शुरू कर दिया। स्त्री आध्यत्मिक स्वभाव की थी, कुछ सही उपचार मिला, उसकी अन्तः चेतना (Interconnection Consciousness) की प्रबलता, और जीने की दृढ़ इच्छा–शक्ति (Will Power) ने डॉक्टर साहब से पूछा, कि अम्मा जी कब तक ठीक हो जायेंगी? डॉक्टर साहब ने बताया कि अम्मा जी के स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक सुधार हो रहा है और हम जल्दी ही उनकी छुट्टी कर देंगे। बेटा व बेटे की बहू अम्मा जी के पास बैठकर हाल चाल पूछने लगे, अपनी बहू और बेटे को देखकर अम्मा जी का ममत्व जाग उठा। वह आँसू पोंछते हुए बोली कि बेटे चिन्ता मत करो मैं जल्दी ही ठीक हो जाऊँगी, और सुख से आपके साथ घर में रहूँगी। बेटा तो नीची गर्दन किए सब सुनता रहा कुछ नहीं बोला, किन्तु पुत्रवधु ने कहा कि ज्यादा खुश होने की और आँसू बहाने की जरूरत नहीं हैं। हम वृद्ध आश्रम में बात कर आये हैं, यहाँ से छुट्टी होकर वहाँ वृद्ध आश्रम में रहना। हम घर में सुख से रहेंगे, आप वहाँ सुख से रहना, और इतना कहकर दोनों वहाँ से चले गये।

डॉक्टर पहले की तरह उस महिला का उपचार करता रहा परन्तु कुछ दिन बाद देखता है कि अम्मा जी के स्वास्थ्य में सुधार की बजाय गिरावट आती जा रही है। जिस हालत में महिला को अस्पताल लाया गया था उसकी पुनः वही हालत हो गई। उसकी बिगड़ती हालत को देखकर, डॉक्टर हैरान हो गया, और सोचने लगा कि अचानक ऐसा क्या हो गया, कहीं उपचार में कमी आयी, या कोई अन्य कारण है कि हालत सुधरने की बजाये और बिगड़ते जा रही है। एक दिन डॉक्टर महिला के पास बैठकर पूछने लगा, अम्मा जी आप तेजी से ठीक हो रही थी, आपका बेटा और बहू दोनों आपको लेने भी आये थे, हम छुट्टी भी करने वाले थे। परन्तु ऐसा क्या हुआ कि आप ठीक होने की बजाये एक दम मृत्यु के निकट पहुँच गई। वह बीमार महिला, आँखों में विवशता के आँसू लेकर, डॉक्टर से बोली, बेटे आप तो मुझे ठीक करना चाहते हैं, आपके उपचार में कोई कमी नहीं आयी। परन्तु जिनको मैंने इतना कष्ट उठाकर पाला, बड़ा किया, और अपना माना, समझा था कि बहू घर में आ गई, कुछ आराम मिलेगा, उन्हीं को मेरी जरूरत नहीं रही। वे मुझे घर की बजाय वृद्ध आश्रम में रखना चाहते हैं, तो मेरे जीवन का तो औचित्य ही नहीं रहा, अब जी कर ही क्या करूंगी। इतना कहकर उस महिला ने प्राण त्याग दिये।

इस प्रकार एक स्त्री द्वारा अपनो के बीच अपने आपको असमर्थ और विवश होकर प्राण त्याग देना, समाज में बूढ़े माता–पिता की उपेक्षा और गिरते सम्मान को तो प्रकट करता ही है परन्तु चिकित्सा के क्षेत्र में भी इस घटना ने चिकित्सकों को चिंतन करने पर मजबूर कर दिया। महिला के इस प्रकार दम तोड़ने पर डॉक्टर को बहुत दुख तो हुआ ही, साथ ही उसने देखा कि रोगी की रोग प्रतिरोधक क्षमता व उपचार की स्थूल पद्धति की अपेक्षा उसकी अन्तः चेतना (Interconnection Consiousness) की प्रबलता, और उसके जीने की दृढ़ इच्छा शक्ति (Will Power) उसके रोग को ठीक करने में कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। यही कारण है, जब महिला को उचित उपचार के साथ–साथ उसके अपने परिवार में अपनों के बीच रहने की लालसा, जीने की इच्छा शक्ति ने उसे स्वास्थ्य के करीब पहुंचा दिया। जबकि उसकी पुत्रवधु के द्वारा कहे गए कुछ उपेक्षा पूर्ण शब्दों ने उसे मौत के मुकाम पर पहुँचा दिया।

डॉक्टर को तो इस घटना से शिक्षा मिल ही गई परन्तु एक आम नागरिक को, आम समाज को भी इससे शिक्षा लेनी चाहिए। किसी को मार देना ही उसकी हत्या नहीं, बल्कि किसी को उचित सम्मान न देना, उसके उच्च आदर्शों पर कटीले शब्दों का प्रहार करना भी उसकी अन्तः चेतना, और उसके आत्म–सम्मान को आघातित करना है, जो कि जीते जी ही मनुष्य को मार देता है। इस प्रकार हम अपने माता–पिता, भाई, बहन, समाज के अन्य लोगों के साथ, मित्रों और साथियों के साथ अच्छा व्यवहार करके, अपनी बोलचाल में अच्छे शब्द प्रयोग करके, यथायोग्य सम्मान देकर, उनके जीवन को, और सम्पूर्ण समाज को सुखमय बना सकते हैं।